Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

# 'महाभोज' उपन्यास की प्रासंगिकता

**डॉ. दलिबहन वी. चौधरी**
**प्रो.हिन्दी विभाग**
**श्री एस. पी. पटेल आर्ट्स कॉलेज,सीमलिया**

साठोतरी कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी का एक विशिष्ठ स्थान है | राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, डॉ. रामदरश मिश्र, भीष्म साहनी, रमेश बख्शी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा प्रभुति अपने समकालीन हस्ताक्षरों में मन्नू जी ने अपनी एक विशिष्ठ पहचान बनाई है | स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आधुनिक हिंदी महिला कथाकारों में मन्नू भण्डारी का स्थान अप्रतिम है | उन कथा लेखिकाओ में मन्नू भण्डारी का नाम सबसे अधिक चर्चित रहा है | उन्होंने जब भी लिखा नए-नए विषयो को चुना| शिक्षित नारी के प्रश्नों को वाणी दी| पति-पत्नी के बदलते संबंधो को और अलग-अलग प्रकारकी समस्याओ को बहुत गहराई तथा बारीकी से चित्रित किया| उन्होंने अपने लेखन में कहानी, उपन्यास और नाटक विधा को ही अपनाया है |

मन्नू भण्डारी रचित 'महाभोज' उपन्यास एक राजकीय घटनाओं को प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है | उपन्यास में लेखिका राजकीय नेताओं के स्वार्थ, द्वेष और विश्वासघात के अमानवीय पहलुओ को उजागर किया है | इस उपन्यास की मूल समस्या राजनैतिक समस्या है| उपान्यास की कथावस्तु में लेखिका ने बताया है की 'महाभोज' एक राजकीय दांवपेचों की घटनाओं का उपन्यास है| एक बिसेसर नामक दलित युवक की मौत पर सारे राजकीय पक्ष तथा पुलिस विभाग और अखबार तंत्र महाभोज करते है और अपने स्वार्थ की पूर्ती करते है|

सरोहा नामक गाँव में डेढ़ महीने बाद ही विधानसभा का चुनाव है| इसी गाँव के हरिजन युवक बिसेसर की अचानक मृत्यु हो जाती है| बिसेसर एक ऐसा युवक है जो अन्याय, शोषण का विरोध करता था| इसी गाँव में महिने भर पहले हरिजन की झोंपडियों में आग लगा दी गयी थी| भारी संख्या में लोग जलकर मर गए थे| गाँव स्तब्ध हो गया था| खबर मिलते ही मंत्रियो, नेता लोग, अखबार वाले आ-आ कर अपना

स्वार्थ साध कर चले गए थे| विधान सभा में भी इस मुद्दे को लेकर भारी हंगामा हुआ था| पुलिस की कार्यवाही भी शंकास्पद रही थी|

सरोहा गाँव की घटनाएं अब महत्वपूर्ण हो गयी थी, क्योकि इस चुनाव क्षेत्र से पूर्व मुख्यमंत्री सुकुल बाबू स्वयं उम्मीदवारी कर रहे है और सत्तापक्ष से दा साहब का विश्वासु लखनसिंह खड़ा होने वाला है| दा साहब प्रांत के मुख्यमंत्री हैं| एक कर्मठ राजकारणी और गाँधी बापू के भक्त है| पार्टी पर उनका एक तरफा शासन रहा है| लखनसिंह को टिकट देने में कई लोगो ने विरोध किया था, पर दा साहब के आगे किसी की नहीं चली थी| दा साहब और लखन को बिसू की मौत के पीछे जोरावर का हाथ लगता है| जोरावर सरोहा का एक सिरफिरा जाट था, और उसे निम्न जातिवालों तक आगे बढ़ना पसंद नहीं था |

सुकुल बाबु इस प्रान्त से दस वर्ष तक मुख्यमंत्री रहे है| उन्होंने जैसे ही बिसू की मौत के समाचार सुने तो तुरंत ही शाम छह बजे जदाहिर सभा का आयोजन करवा दिया| सुकुल बाबु हरिजन भाइयों के हमदर्द थे, सभा में भीड़ रही पर जो प्रतिक्रिया होनी चाहिए वह न मिली| इधर दा साहब ने राजकीय चाल चलकर 'मशाल' अखबार के सम्पादक दत्ता साहब को विज्ञापनों की लालच देकर अपने पक्ष में कर लिया| 'मशाल' में बिसू की मौत को आत्महत्या करार दे दिया गया|

दा साहब भी सरोहा में एक सभा का आयोजन करवाते है| सभा से पहले वह बिसू के घर जा कर बिसू के पिता हीरा को सांत्वना देकर अपने साथ सभा में ले आते है| दा साहब अपनी सभा में बिसू की मौत को आत्महत्या करार देते हैं| तभी सभा में बिसू का मित्र बिंदा गरज कर इस बात का विरोध करता है और दा साहब की राजकीय चाल पर प्रहार करता है तथा अपने मित्र बिसू के हत्यारे को पकडवाने तथा सच्चाई को जनता के सामने लाने की बात करता है| तब दा साहब बिसू की हत्या की जांच करवाने का वचन देते है| दा साहब ने बड़ी चालाकी के साथ अपनी सभा का प्रचार इस योजना की जानकारी तथा गाँव वालों की रोदजगारी के साथ करवाया था| सरोहा में चुनाव प्रचार का कार्य जोर शोर से हो रहा है| सभी पार्टी वाले अपने पक्ष की जित के लिए तन-मन-धन से जुटे हुए है |

दा साहब ने बिसू की मौत को घटना के लिए फिर से जांच पड़ताल शुरू करवा ली है| एस.पी. सक्सेना को इस कार्य के लिए नियुक्त किया है| जून महीने की गर्मी में एस.पी. सक्सेना सरोहा आते है | गाँव की भीड़ पुलिस ठाणे के पास इकठ्ठा हो गई है| सक्सेना साहब पहले दिन जोगेसर, महेश बाबु और हीरा के बयान लेते है| दुसरे दिन बिंदा को बुलाया जाता है, बिंदा को बिसू की मौत का दू:ख है वह जानता है कि बिसू की हत्या क्यों कर दी गई है| बिसू ने मजदूरों को उनके हक़ के लिए लड़ना सिखाया था, शोषण के विरुध्ध आवाज उठाने के लिए तैयार किया था| बिसू का यह रवैया गाँव के कई लोगो को पसंद नहीं था, खासकर गाँव के सरपंच, जोरावर थानेदार आदि को | बिंदा को जब एस.पी. साहब सच्चाई की ही जित होगी का विश्वास दिलाते है तब वह उन्हें बिसू द्वारा आगाजनि की घटना के प्रमाण दिखाने की बात करता

है| यहाँ पर थानेदार की हरकते गांववालों खासकर हरिजन लोगों के प्रति ठीक नहीं है, यह दिखाया गया है| थानेदार सत्य को जानता है पर उसे दबा देने के प्रयास करते है|

उपन्यास की कथा अंत में दा साहब के शातिर व्यक्तित्व को उजागर करती है| दा साहब के पास एस.पी. सक्सेना की सी. आर (कन्फ़िडेन्शिअल रिपोर्ट ) आ गयी है| पांडेजी द्वारा दा साहब को पता चलता है कि जोरावर चुनाव में खडा हो रहा है| जब जोरावर दा साहब से इसी सिलसिले में मिलने आता है, तब दा साहब उसे एस.पी. की रिपोर्ट की बात करते है कि बिसू की मौत तुमने करवाई है और इसके पक्के सबुत भी मिल गए है| बिसू को चाय में जहर दे दिया गया था और यह काम जोरावर द्वारा भेजे गये टिटहरी गाँव के दो लडकोंने कर दिया था| जब जोरावर को यह जानकारी दी जाती है तब वह दा साहब को कैसे भी कर के इसमे से बचाने की बिनती करता है| वह कहता है – "अब जो भी है आपका ही सुलाजाना है| हमारे साथ कुछ उलटा सीधा नहीं होना चाहिए , बस आपकी जिम्मेदारी है यह !"1 दा साहब जोरावर को बचाना चाहते है और बिंदा को फ़साना चाहते है| वे डी.आई.जी. सिन्हा को प्रमोशन की लालच देकर सक्सेना की रिपोर्ट को दबाकर उन्हें फिर से नया रिपोर्ट तैयार कारवाने की बात करते है| दा साहब का असली रूप तो इन वाक्यों में उजागर होता है जब दा साहब डी.आई.जी. सिन्हा से कहते है – "चतुर अपराधी ही सबसे अधिक आक्रामक मुद्रा अपनाता है कभी-कभी घटनावाले दिन बिंदा गाँव से अनुपस्थित होना और घटना के बाद उसका अतिरिक्त रूप से आक्रमक रवैया? संदेह के लिए बहुत गुंजाइश नहीं रह जाती|"2

आखिरकार 'मशाल' में खबर छप जाती है कि 'दोस्ती की आड़ में बिसू की हत्या करने वाले बिंदा गिरफ्तार!' इधर दा साहब ने दांव पेंच द्वारा पार्टी के असंतुष्ट लोचन को पार्टी से निष्कासित करवा दिया, तो उधर एस.पी. सक्सेना को सस्पेंशन लैटर भिजवा दिया| सरोह में सुकमा बाबू की रैली की चर्चा में बिसू की मौत गुम हो गई थी| हर जगह पार्टियां हो रही है, जश्न मनाया जा रहा है| डी.आई.जी. सिन्हा के घर उनके आई.जी. बनाने की ख़ुशी में पार्टी चल रही है| साथ 'मशाल' अखबार के कार्यालय में दत्ता साहब भी स्टाफ को बूंदी के लड्डू खिला रहे है, क्योकि आज उनको दा साहब की ओर से कागज़ का डबल कोटा परमिट मिल गया है और साथ ही सरकारी विज्ञापन भी| सुकुल बाबू अपनी शानदार रैली की सफलता में पार्टी दे रहे है| इन सारी पार्टियों के कोलाहल से कटकर तीन लोग रह गए है – सक्सेना, लोचन बाबु, और बिंदा| उपन्यास का अंतिम द्रश्य रेल डिब्बे में बैठे सक्सेना और रुकमा का आगजनी के प्रणाम, बिसू की मौत के प्रमाण को लेकर न्याय के लिए आगे लड़ने जा रहने का संकेत को उद्घाटित करते है|

भारत 26 जनवरी 1950 को प्रजासत्ताक हुआ| देश में से अंग्रेज शासन गया और नया संविधान अस्तित्व में आया| 1952 में प्रथम आम चुनाव हुए और कोंग्रेस के नेतृत्व में सरकार बनी | इससे पहले जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में सरकार काम कर रही थी| आज तक हमें अच्छे प्रधानमंत्रियो में जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गाँधी, जैसे राजनेता पाए| लेकिन धीरे धीरे भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार ने प्रवेश किया| उन्होंने सत्ता प्राप्ति और कुर्सी के लिए लड़ाई की और नैतिकता को भुला दिया| आठवें-नवें दशक में तो भारतीय राजनीति साम्प्रदायिकता, परिवारवाद, भ्रष्टाचार के चपेट में आ चुकी थी|

आज जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्ट राजनीति प्रवेश कर चुकी है| आज खुलेआम सच्चे राजनेताओं का कत्लेआम किया जाता है| सत्ता प्राप्ति के लिए आज के नेता कुछ भी करने के लिए तैयार है| आज दल बदलना आम बात हो गई है, मन्नूजी ने राजनीति को लेकर यह 'महाभोज' उपन्यास लिखा है|

मन्नुभंडारी ने इस उपन्यास में समकालीन राजनितिक परिथितियों का सजीव चित्रण करते हुए अपने द्रष्टिकोण का संकेत भी किया है| 'महाभोज' का उद्देश बहुमुखी है और वह काल्पनिक न होकर यथार्थ ही जान पड़ता है|" 'सामान्यत:' 'महाभोज' को राजनैतिक उपन्यास कहा जाता है और उसमें समकालीन राजनैतिक परिस्थितियों का प्रसंगानुसार चित्रण भी किया गया है| आज के युग में चुनाव एक आवश्यक राजनैतिक प्रक्रिया है| "प्रस्तुत 'उपन्यास' के माध्यम से इस चुनाव के बिच मानवीय त्रासदी, करुणा और पिढ की नियति की सच्चाई को अभी व्यंजित करने का सशक्त प्रयास लेखिका ने किया है | राजनैतिज्ञों की उपरी महानता, औदात्य तथा गंभीरता भरे खेल के अन्दर से उनकी जो घिनौनी तस्वीर उभरती है, वह छोटे से छोटे ब्योरे के माध्यम से उभरी है|"[3]

वस्तुतः 'महाभोज' एक सशक्त कृति है, क्योंकि तत्कालीन राजनीति में चल रही गतिविधियों को मन्नूजी ने गहराई से नापा है| आज राजनीति चंद नेताओं की कठ पुतली बन गई है| जिसके पास जोर है, वह उस पर राज करे| इसी बात का यथार्थ चित्रण 'महाभोज' उपन्यास में हुआ है| प्रस्तुत उपन्यास में मन्नूजी ने बताया है कि शहर की तीन अलग-अलग कोठियों पर तीन पार्टियां नियोजित होती है, जिनके ठहाकों में बिसू की हत्या हो जाती है और ऐसा प्रतीत होता है, की पार्टी में आये लोग मानों गिद्ध हो जो बिसू की लाश को नोच-खरोंच खा रहे है| 'राजनीति में आम जनता के शोषण के बारे में डॉ. शशि जैकब ने 'महाभोज' के बारे में कहा है – "राजनैतिक स्तर पर नैतिकता का किस प्रकार ह्रास हो चला है| लेखिका मन्नू भण्डारी के उपन्यास में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है|"[4]

## सन्दर्भ :


१. महाभोज – मन्नू भण्डारी
२. महाभोज, मन्नू भण्डारी
३. मन्नू भण्डारी का उपन्यास साहित्य – श्रीमती नंदिनी मिश्र
४. महिला उपन्यासकारो की रचनाओं में वैचारिकता, डॉ- शशि जैकब